इस्लाम और बदलते ज़माने के तकाज़े

डॉ0 मौलाना सय्यद कल्बे सादिक़ साहब

ज़माना एक समुद्र के समान है। कभी यह समुद्र शान्त था। कभी–कभी लहरें उठती थी, मगर थोड़ी दूरी में और थोड़ी दूर के लिये। अब इस समुद्र में मुस्तक़िल, अनवरत तूफ़ान है जो हर घाट से टकरा रहा है। नई–नई लहरें हैं, नयी–नयी आंधियाँ हैं, नये–नये तूफ़ान हैं। ये तूफ़ान न मअ्लूम कितनी कश्तियों को डूबो चुका और कितनों को डूबोने के क़रीब कर चुका। सवाल यह है कि इस तूफ़ान से मुक़ाबला करके मुक्ति के घाट तक पहुँचने के लिये क्या कोई मज़बूत, सुदृढ़, विशाल जहाज़ है कि नहीं ! जवाब बहुत खुला हुआ है कि है और निश्चित रूप से है। इसी जहाज़ का नाम है इस्लाम। तूफ़ानी समुद्र से गुज़र के मनचाही मंज़िल तक हम इस जहाज़ के ज़रीअे पहुँच सकते हैं जिसमें ऐसा मज़बूत इंजन हो जो सफ़र का नर्म–गर्म झेल सके। ऐसे आले (उपकरण) हों जो यात्रा–दिशा निर्धारित कर सकें। ऐसा लंगर हों जो तूफ़ान में जहाज़ को संभाले रह सके। निश्चय ही ऐसा जहाज़ हम को सुरक्षा के साथ तूफ़ानी समुन्दर पार करके मुक्ति के घाट तक पहुँचा सकता है लेकिन उसके साथ ज़रूरी है कि इस जहाज़ का अमला (कार्यकर्ता) भी ऐसा हो जो एक तरफ़ जहाज़ की पूरी व्यवस्था पूरी मशीनरी, सभी कल पुर्ज़ों और सबके काम में लाये जाने के अवसर से पूरी तरह आगाह हो, अवगत हो तो दूसरी ओर इस समुद्र के भूगोल (ज़ियोग्राफ़िया), इस इलाके के मौसम और समुद्र में छिपी हुई चट्टानों और जोखिम से भी आगाह हो। जहाज़ के हर तरह मुकम्मल होने के बावजूद भी हम लक्षित मंज़िल तक उसी वक़्त पहुँच सकते हैं जब अमले में आखिरी दोनों गुण साथ–साथ पाये जाते हों। अगर इनमें से कोई एक गुण भी न पाया जाये तो डूब जाने का ख़तरा है।

इस्लाम वह जहाज़ है जिसके अनेक मॉडल, अनेक पैग़म्बरों के द्वारा सामने आते रहे। इसमें तरक्की होती रही। यहाँ तक कि इस्लाम के अन्तिम पैग़म्बर हुज़ूर करीम (स0) ने इसे आखिरी शक्ल देके, इसे इस लायक बना दिया कि यह अपने यात्रियों को हर समुद्र में और हर तूफ़ान से बचाता हुआ, इच्छित मंज़िल तक पहुँचा दे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जहाज़ हर तरह मुकम्मल है और हर कमी और दोष से दूर है लेकिन प्रश्न हे उसके अमले के बारे में। यह अमला जो उस पर इस वक़्त सवार है, उसकी दशा यह है कि इनमें कुछ तो ऐसे निकम्मे बेपढ़े–बेकढ़े हैं जिनको न जहाज़ की जानकारी है और न समुद्र की आगाही। कुछ वो हैं जो जहाज के कल–पुर्जो से तो वाक़िफ़ हैं मगर समुद्र से अनभिज्ञ, कुछ वो हैं जो समुद्र के जानकार हैं मगर जहाज़ से नावाकिफ़। ज़ाहिर है कि अमला अगर इस ठाट का हो तो मुसाफ़िरों का अंजाम मअ्लूम है। हमारे मुसलमान कर्णधारों का यही हाल है। हमारी अक्सरीयत (बहुसंख्या) तो वह है जिसे न उस दीन की खबर है जिसे वो मान रहे हैं, न उस दुनिया की ख़बर है जिसमें वह रह रहे हैं। कुछ विद्वान अगर दीन के बारे में जानते भी हैं तो दुनिया ज़माने से बेखबर हैं और हमारे बुद्धिजीवी और दानिश्वर अगर वक़्त के तक़ाज़ो से आगाह हैं तो दीन के मामले में कोरे।

यही वो लोग हैं जिन्हें वक़्त के तक़ाज़ों और इस्लाम के उसूलों में टकराव नज़र आता है और उनकी समझ में नहीं आता कि इस टकराव को क्योंकर दूर करें। नयी–नयी ईजादों के साथ नयी–नयी सोच, नये–नये ख़याल के और नयी

विचारधाराओं से भी आँखें बन्द किये रहें और इस्लाम के ख़याली अक़ीदों, मान्यताओं और सिद्धान्तों को सीने से लगाये रहें या इस्लाम को विदा करके ज़माने के फ़ैशन में बह जायें या कोई समझौतापरक (Compromising) रवय्या अपनाया जाये ! इस्लाम के उसूलों और ज़माने के तक़ाज़ों में टकराव सिर्फ़ उन्हीं लोगों को दिखाई देता है जो या इस्लाम की वास्तविकता और शिक्षा से अपरिचित हैं या जिनमें इतनी बसीरत (अन्तर्दशिता) न हो कि ज़माने की वास्तविक व वैज्ञानिक प्रवृत्ति और समय के भटकाव, कुमार्गी बल्कि बेराह रवियों में भेद न कर सके। **नये ज़माने में साइन्स और टेक्नालोजी ने सभ्यता और संस्कृति की फुलवारी में नयी–नयी क्यारियां लगायी हैं लेकिन इन क्यारियों में फलों के अग़ल–बग़ल कांटे भी हैं। हमें इस फुलवारी की सुगन्ध से लाभ उठाना है, हमें इन क्यारियों से लाभ उठाना है मगर दामन को तार–तार होने से बचाना भी है।**

वो साहिबान जो इस्लाम की असलीयत से नाआश्ना हैं, अपरिचित हैं, ज्ञान–विज्ञान की हर तरक़्क़ी ओर हर नयी चेतना और विचार से बिदकते हैं और हर नयी चीज़ को इस्लाम का दुश्मन समझने लगते हैं। इस गिरोह के सामने मुक्ति के दो ही मार्ग हैं या तो अपने ख़याली इस्लाम को सीने से लगा के ज़िन्दगी की प्रत्येक वैचारिक और वैज्ञानिक प्रगति से आंखें बन्द कर ली जायें या फिर ज़माने के सामने बिल्कुल हथियार डाल के इस्लाम को गये बीते इतिहास का एक पन्ना बना दिया जाये। जो लोग युग से अपरिचित हैं और बस युग से धौंस खाये हुए हैं उनकी मांग है कि इस्लाम को भी ईसाई मत की तरह समय के साथ समझौतापरक बल्कि मन्त्र ले लेने वाला चलन अपना लेना चाहिये। चुनांचे ईसाई पादरियों ने समय के हाथ पर "बैअत" करके ही हर दुराचार, अश्लीलता, विलासिता और कामलिप्ता अर्थात् हर बद अख़लाकी फ़हहाशी और अय्याशी और जिन्सपरस्ती की हर शक़्ल को मज़हबी जवाज़ (धर्मोचित का पर्वाना) एवं दीन क़रार दिया है। रह गये गिनती के चन्द बाबसीरत, अन्तर्दर्शी लोग जो इस्लाम के यथार्थ से भी परिचित हैं और समय का बोध भी रखते हैं, वह ख़ूब समझते हैं कि समय के तक़ाज़ों और इस्लाम के यथार्थ के बीच टकराव का वजूद ही नहीं, जड़ बुनियाद ही नहीं। वह जानते हैं कि यह टकराव सचमुच है ही नहीं बस दिखायी भर देता है । इस ऊपरी टकराव की तह में कुछ ग़लत फ़हमियां हैं, भ्रम हैं।

वह लोग जो इस्लाम से अपरिचित हैं, उनको यही ग़तलफ़हमी है कि वह इस्लाम के विधायन यअ्नी क़ानूनसाज़ी के बुनियादी उसूलों और अमली और फ़िक़ही मसायल अर्थात् व्यावहारिक आरै धर्मविधिक प्रकरण को एक ही दर्जा दे देते हैं। हालांकि सच्चाई यह है कि इस्लाम में जो चीज़ नाकाबिले तब्दीली है, यअ्नी जो चीज़ अपरिवर्तनीय है वो उसका मूल सिद्धान्त। रह गये फ़ुरूई और अमली मसायल, तत्वसम्बन्धी और व्यवहारिक प्रकरण तो ऐसे सवालों के लिये इस्लाम में ऐसी लचक रखी गयी है कि इस्लाम के चौखटे के अन्दर रहते हुए विभिन्न परिसिथतियों में मसायल की ऊपरी सूरत–शक़्ल में मअ्मूली फेरबदल के साथ यह हमेशा क़ाबिल–ए–अमल है, सदैव व्यवहारिक हैं मगर रूपरेखा में यह फेरबदल किसी अरूण सूरी या आ़रिफ़ मोहम्मद ख़ाँ का हक़ नहीं, यह सिर्फ़ उन्हीं वक़्त के मुज्तहिदों का हक़ है जो इस्लाम के गहन बोध के साथ–साथ समय के तक़ाज़ों से भी, जैसा चाहिये वैसा आगाह हों, अवगत हों।

इस्लाम में विधायन के मौलिक सिद्धान्त ऐसी आफ़ाकी और दायमी हक़ीक़ते हैं? ऐसे सार्वभौमिक और सर्वकालिक यथार्थ हैं जिनमें फेरबदल असम्भव है, न कोई उनके बदलवाने की मांग की हिम्मत कर सकता है। इस्लाम के विधायन का आधार दो सिद्धान्तों पर है–

1–कोई बात अक़्ल के ख़िलाफ़ नहीं हो

सकती।

2–कोई बात अद्ल(न्याय) के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

खुली बात है कि यह दोनों उसूल ऐसे पायेदार और दायमी हक़ीक़तें यअ्नी ऐसे ठोस और सदैव बने रहने वाले यथार्थ की हैसीयत रखते है। कि न इनको बदलना सम्भव है और न कोई भी व्यक्ति चाहे धर्म का पक्षधर हो या विपक्षी, इनको बदलवाने की मांग कर सकता है।

इस्लाम के हर क़ानून के सहीह और ग़लत होने के यही दो मेअ्यार–मानदण्ड हैं। इन्हीं के मुताबिक होने या न होने पर किसी धारा के वैध अथवा अवैध (Valid or Unvalid) होने का इनहिसार होता है– निर्भरता होती है।

फ़िक़्ह की तारीख़, धर्मविधि के इतिहास पर नज़र रखने वाले लोग यह बात भली भाँति जानते हैं कि हमारे पैनी दृष्टि वाले आलिमों ने हमेशा अपनी ज़िम्मेदारी महसूस की है कि अगर मुसलमान किसी इस्लामी क़ानून का ग़लत इस्तिअ्माल करके अक़्ल या अद्ल की बुनियाद को मजरूह करने लगें, बुद्धि या न्याय के आधार को क्षतिग्रस्त बनाने लगें तो ऐसे समय के लिये उन्होंने अपने फ़तवों, व्यवस्थाओं द्वारा इस क़ानून में ऐसी हदबन्दियाँ, फेरबदल या व्याख्यायें कर दी है कि क़ानून फिर सीधा खड़ा हो जाय। इस तरह समय की प्रगति से जो नये–नये सवाल सामने आये, उनका हल भी इन्हीं दो बुनियादी उसूलों की रोशनी में ढूंढ निकाला गया। क़ानून में लचक और 'इज्तिहाद'' यही वह दो चीज़े हैं जो इस्लाम के क़ानून की हमेशगी और दवाम की ज़ामिन हैं, यअ्नी उसके सदैव बने रहने की ज़िम्मेदार हैं।

आज के दौर में बेशक नये–नये सवाल तेज़ी से उभर रहे हैं मगर इसमें घबराने की क्या बात है। यही दशा उस वक़्त भी थी जब इस्लाम अपने इब्तिदायी दौर से लेके सातवीं–आठवीं सदी हिज्री तक तेज़ी से दुनिया में फैल रहा था। इस फैलाव के नाते विभिन्न संस्कृतियों, मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों से आमना–सामना हुआ, अनेक विचारधाराओं से आगाही हुई, अनेक सभ्यताओं से दुआ–सलाम हुआ। इस परिस्थिति में नित्यदिन नये सवालों का सामना होता था, नये–नये विचार सामने आते थे मगर इस्लामी फ़िक्र ने बिना किसी भी स्त्रोत की सहयता लिये हुए अकेले इस चुनौती का कामयाबी से मुक़ाबला किया।

यह था उन हज़रात के ख़यालात का ताजज़ियः, यह थी उन हज़रात के विचारों की विवेचना जो इस्लाम से अनभिज्ञ थे वह अनभिज्ञ हैं, इसलिये भयभीत है, धौंस खाये हुए हैं। इसी ज़ह्नी मरअूबीयत, मानसिक रूप से भयभीत होने का फल है वि वह हर नयी चीज़ को सीने से लगा लेने के लिये बस इसलिये तय्यार हो जाते हैं कि वह नयी है। हालांकि अगर वह तनिक भी ध्यान दें तो यह बात खुल जाये कि यह ज़माना साइंस और टेक्नालॉजी के ज़रीये जहां हमारे लिये बरकतें लाया है, वहीं बलायें भी लाया है। साइन्स अगर हमारे लिये बरकत और मांगलिकता ला रही है तो बलायें और बवाल भी ला रही है। साइन्स ने अगर इन्सान को आगे बढ़ाया है तो इसी साइन्स की ही बदौलत इन्सानों की तख़रीबी सलाहियत, विध्वंसकारी क्षमता, में भी बढ़ोत्तरी हुई है। साइन्स के द्वारा इन्सान असीमित ऊँचाइयों तक पहुँचा है तो इसी के द्वारा पस्तियों में भी गिरा है।

अन्तदृष्टि वाला मुसलमान ज़माने के धौंस–बट्टे का शिकार नहीं है। इसीलिये जब उसके सामने सवाल आता है कि समय के साथ हो ले या उससे विमुक्त हो जाये तो उसका जवाब होता है कि समय तुम पर हाकिम नहीं तुम समय पर हाकिम हो। ज़माना इन्सान बनाने वाला नहीं, इन्सान ज़माना बनाने वाला है। समय इन्सान को नहीं बनाता, इन्सान समय को बनाता है। जानवर और इन्सान में अन्तर ही यह है कि जानवर समय के अधीन है। इन्सान समय का अधिकारी है। ज़माना इन्सान को नहीं बदला करता यह ख़ुद ज़माने को बदला करता है।

इन्सान ज़माने की यात्रा–दिशा में बदलाव करता रहता है। यह बात अलग है कि कभी यह बदलाव भलाई की ओर होता है तो कभी बुराई की ओर। कभी रचना की ओर होता है कभी विध्वंस की ओर इसलिये हमारा धर्म है कि हम अपने विशेषता–दयक गुण यअ्नी बुद्धि से कभी हाथ न उठायें, हर्गिज़ दस्तबरदार न हों। हमेशा आंख खुली रखें और यह सोच विचार करते रहें कि नई। ईजाद हो या नई सोच या नया विचार इसका रूख़ किधर है, इसकी यात्रा–दिशा किधर है? यात्रा–दिशा भलाई की तरफ़ हो, निर्माण की ओर हो तो बस यहीं नहीं कि उसे स्वीकार करलें बल्कि उसके फैलाने में मददगार बनें। यात्रा–दिशा बुराई की तरफ़ हो, विध्वंस की तरफ़ हो तो मात्र यही नहीं कि उसको रद्द कर दें बल्कि उसके मुक़ाबले के लिये डटकर खड़े हो जायें।

इस मंज़िल तक पहुंच के स्वाभाविक रूप से यह सवाल पैदा होता है कि वह मेअ्यार क्या होगा, मानदण्ड क्या होगा जिसके लिहाज़ से फ़ैसला किया जा सके कि समय की कौन सी ईजाद, कौन सा बदलाव, कौन सा नया नज़रिआ, रचना और विकास की दिशा में है और कौन सी ईजाद, कौन सा बदलाव, कौन सी विचारधारा विघटन और पतन की दिशा में है और इन्हिराफ़ की अथवा पथ से विमुक्त हो जाने की हैसियत रखता है।

इल्म व अक़्ल ख़ैरे महज और हवा, हवस, नफ़्स परसती शरे महज़ हैं अर्थात् बुद्धि और ज्ञान विशुद्ध रूप से भलाई और लोभ लालच, कामलोलुप्ता, विशुद्ध रूप से बुराई है। इसे एक उदाहरण से समझने में सुविधा होगी।

केमेस्ट्री विज्ञान की एक शाखा है, इसके विकास से इंसानियत को ज़बरर्दस्त लाभ पहुँचे। क़ीमती दवायें ईजाद हुई जिससे बीमारियाँ क़ाबू में आयीं। इन्सान की आयु दर (औसत उम्र) में बढ़ोत्तरी हुई, बहुत सी तकलीफ़ों से नजात मिली। यह प्रगति बेशक विशुद्ध विज्ञान की प्रगति है। ख़ालिस साइन्स का कारनामा है। मगर रसायन विज्ञान की इसी प्रगति का एक रूख़ यह भी है कि एक लोभ और लालच का शिकार काम लोलुप्त व्यक्ति आगे बढ़ा ओर उसने इसी साइन्स से लाभ उठा के "हिरोइन" ईजाद कर ली, जिसका नशा सबसे ज़ियादा यातनादायक माना जाता है। इसका आ़दी मर्द हो या औरत हर चीज़ दांव पर लगाकर इसकी एक ख़ूराक हासिल कर लेना चाहता है। कितनी ज़िन्दगियाँ हैं जो इसने बरबाद कर रखी हैं। सारी दुनिया में हिरोइन की ईजाद भी साइन्स ने ही की है मगर यह ईजाद साइन्स से, विशुद्ध साइन्स से पैदा नहीं हुई। यह पैदाइश मिलावटी साइन्स बल्कि क़ैदी और गुलाम साइन्स की पैदावार है। वह साइन्स जो काम लोलुपों के हाथों में क़ैद है, उनकी गुलाम हैं।

फ़िज़िक्स साइंस की एक दूसरी शाखा है। इस साइंस में रौशनी की हक़ीक़त मुद्दतों से जांची जा रही थी। भौतिक विज्ञान में प्रगति हुई तो "प्रकाश" स्वतः रौशनी में आया। छिपे भेदों से पर्दे उठे तो कैमरा ईजाद हुआ, तस्वीरें खिंचने लगीं, प्रगति और बढ़ी तो फिल्में बनने लगीं। इन ईजादों से इन्सान की कार्यक्षमता में बढ़ोत्तरी हुई। अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ मगर अचानक एक धनपशु उठ खड़ा हुआ और उसने इस ईजाद के द्वारा अशिष्ट सिनेमा फ़िल्में बनाना शुरू कर दीं। सिनेमा उद्योग स्थापित हो गये। इन फ़िल्मों में केन्द्रीय हैसियत यौन सम्बन्ध की दी गयी जो इन्सान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। नतीजा यह हुआ कि फ़िल्म बनाने वाले करोड़पति होते गये और फ़िल्म के शौक़ीन आर्थिक और नैतिक दृष्टि से दिवालिया होने लगे।

आइन्सटीन ने "एटमी ताक़त" (परमाणु शक्ति) का आविष्कार करके इन्सान की क्षमताओं को ज़मीन से आकाश में पहुँचा दिया मगर ख़ुद आइन्सटीन उन समारोहों में रो–रो दिया जो उसके सम्मान में हुए थे। वह रोया है इस पर कि अगर उसको मअलूम होता कि उसका आविष्कार

इन्सान के हाथ में ''एटम बम'' ऐसा हथियार दे देगा तो वह इस अनावरण से बाज़ ही रहता। परमाणु शक्ति का अनावरण विशुद्ध और स्वतन्त्र साइंस की तरक़्क़ी का कारनामा है और एटम बम की ईजाद में लोभी, धूर्त, मक्कार, मानवता के शत्रु राजनीतिज्ञों की मलिच्छ भावनाओं का विष घुला हुआ है। यह काम भी साइन्स का है मगर स्वतन्त्र साइन्स का नही।, उस साइन्स का है जिसके पाँव में बेड़ी पड़ी हुई है जो बन्दी है, दासी है।

परिस्थिति यह है, आज का नअ्रा यह है कि आज का ज़माना साइंस का है, आज साइंस के शासन का दौर है। मगर वास्तविकता यह है कि यह दौर साइंस की हुकूमत का नहीं, उसकी गुलामी का दौर है।

आज साइंस क़ैदी तो है ही बेचारे बड़े–बड़े साइंसादाँ भी मुस्तक़िल पहरे–चौकी में रहते हैं कि उनका ज्ञान दूसरों तक न पहुँचने पाये। ईजादों का प्रतिफल आविष्कारकों को वैसा ही मिल रहा है जैसे उस परम्परागत मेअ्मार को मिला था जिसने किसी बादशाह का महल बनाया था। उसे प्रतिफल यह मिला था कि बादशाह सलामत ने उसके हाथ कटवा दिये थे कि किसी दूसरे के लिये ऐसा महल न बना सके। उसका इन्आम हाथों का काटा जाना था, यहाँ इन्आम गिरफ्तारी और क़ैद है। हद यह है कि निकट सम्बन्धियों से भी आज़ाद मुलाक़ात की इजाज़त नहीं होती कि कहीं कोई वैज्ञानिक भेद ग़ैरों तक न पहुँच जाये।

सारांश यह कि साइंस की ही ईजाद, दवायें भी हैं हीरोइन भी (साइंस ही की ईजाद कैमरा भी है और अशिष्ट फिल्में भी)। साइन्स ही का कारनामा ''एटमी ताक़त'' का अनावरण भी है और ''एटम बम'' भी। मगर इनमें पहले बताई गयी चीज़ें शुद्ध साइंस, स्वाधीन साइन्स का फल है और आख़िर में बताई गयी चीज़ें मिलावटी साइंस का नतीजा हैं। इस्लाम कहता है कि हर वह चीज़ जो स्वतन्त्र और शुद्ध साइंस का फल हो उसे ले लो बल्कि उसे फैलाओ और हर वह चीज़ जो आलूदा साइंस का नतीजा है, उसे रद्द करो बल्कि उसके मुक़ाबले के लिये खड़े हो जाओ ताकि इन्सानी तहज़ीब व तमददुन, मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति का सफ़र ठीक दिशा में रहे। विमुखता न पैदा होने पाये। इन्सान ऊंचाईयों में जाये नीचे न गिरे।

विज्ञान की ही एक शाखा मानोविज्ञान (नफ़सीयात–Psychology) भी है। इस मनोविज्ञान ने इन्सान को बहुत कुछ बताया, बहुत कुछ सिखाया है। इसके कई शुअ्बे हैं, कई सम्भाग हैं। जिनमें से एक के द्वारा इन्सान के दिमाग़ को प्रभावित करने के नये–नये तरीक़े ईजाद हुए हैं। आज वही तरीक़े अपना के वह बातें जो बच्चों को महीनों में सिखाई जाती थी वह घण्टों और मिनटों में सिखा दी जाती हैं यह विशुद्ध मनोविज्ञानिक कीर्ति है, ख़ालिस नफ़सीयाती कारनामा है मगर स्वार्थी, लोभी, धन–दौलत के पुजारी, सत्तापूजक और कामलोलुप, अपने लोभ–लालच की संतुष्टि के लिये, धन बटोरने के लिये, शासन करने या उसे बनाये रखने के लिये, प्रोपोगण्डो, प्रचार–प्रसार में इसी मनोविज्ञानो से काम लेके दुनिया को तबाही के गड्ढे में ढकेल रहे हैं। पहली सूरत मनोविज्ञान के ठीक दिशा में सफ़र करने की है। दूसरी ग़लत दिशा में सफ़र करने की।

आज के दौर में जिस तरह नित्यदिन कोई न कोई नई ईजाद सामने आती है, उसी तरह नित्यदिन एक नये विचार, एक नये फ़ैशन, एक नयी विचारधारा से सन्मुख होना पड़ता है, भौतिक ईजाद को या नवचेतना या आधुनिक दृष्टिपूर्ण, इसके स्वीकारने बल्कि फैलाने या रद्द करने बल्कि मिटाने के सिलसिले में वही सिद्धान्त काम करता रहेगा। शुद्ध ज्ञान–विज्ञान हो तो स्वीकार करलें और फैलायें और लालच काम लोलुप्ता, सरकार परस्ती, धन पूजा की मिलावट दिखायी दे तो रद्द कर दें बल्कि उसे मिटाने का प्रयत्न करें और विचार और दृष्टि के बारे में हमको बहुत अधिक होशयारी की ज़रूरत है।